Dr. Kumari Priyanka

H.D Jain college

History department

Notes for pg semester 3

कल्हण एवं उसका इतिहास लेखन

प्राचीन भारतीय इतिहासकारों में कल्हण का नाम सर्वोपरि है, जिसने राजतरंगिणी के नाम से कश्मीर का इतिहास लिखा। समकालीन उपलब्ध स्रोतों के आधार पर विद्वानों ने कल्हण के प्रारंभिक जीवन पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है। इनके अनुसार कल्हण एक कश्मीरी ब्राह्मण था तथा भार्गव कुल की सारस्वत शाखा से संबद्ध था। कल्हण चंपक का पुत्र था जो कश्मीर के राजा हर्ष के यहां मंत्री थे। हर्ष की मृत्यु के बाद वे स्वतः अपने पद से पृथक हो गए थे।1135 ईसवी में ईस्वी में उनकी मृत्यु हुई।

कल्हण को एक इतिहासकार के रूप में प्रतिष्ठित होने का श्रेय उसके प्रसिद्ध ग्रंथ राजतरंगिणी को जाता है राजतरंगिणी का अर्थ है 'rivers of kings'यह एक लंबा वर्णनात्मक काव्य है। जिसमें 8000 संस्कृत श्लोक हैं, जो 8 सर्गों में बटे हैं,प्रत्येक सर्ग को कवि ने तरंग की संज्ञा दी है,जिसका अर्थ है लहर। कल्हण ने इस ग्रंथ की रचना 1148 ईस्वी में आरंभ किया था दो वर्षों में इसे पूरा कर लिया। संस्कृत भाषा की कृतियों में राज तरंगिणी को एकमात्र ऐतिहासिक ग्रंथ माना जाता है तथा कश्मीर को भारत के ऐसे एकमात्र क्षेत्र के रूप में प्रतिष्ठित किया जा सकता है।जिसकी इतिहास लेखन की परंपरा रही है और यह राजतरंगिणी के रूप में है। बार्डर ने इसे भारत का सर्वाधिक प्रसिद्ध इतिहास कहा है यह कश्मीर का इतिहास है जिसमें अनेक राजवंशों का वर्णन है।इस ग्रंथ का प्रमाणिक अनुवाद आर. एल. एसटीन ने किया है। इस ग्रंथ को तीन भागों में बांटा जा सकता है।

प्रथम भाग में 1 से 3 तरंग को रखा जा सकता है जिसमें कल्हण ने समसामयिक परंपराओं के आलोक में अतीत की घटनाओं का उल्लेख किया है इनमें कश्मीर का सातवीं शताब्दी तक का इतिहास है।

द्वितीय भाग में 4 से तरंगों को रखा जा सकता है जिसमें कारकोट्रा तथा उत्पन्न राजवंशों का इतिहास है।इसके लेखन में कल्हण ने अपने पूर्ववर्ती इतिहासकारों का तथा समकालीन इतिहासकारों के स्रोतों से सामग्री का उपयोग किया है।

तृतीय भाग मैं सातवें एवं आठवीं अर्थात अंतिम दो तरंगों को रखा जा सकता है।यह राजतरंगिणी का सबसे लंबा तथा विस्तृत भाग है। जिसमें 12वीं शताब्दी का विवरण वर्णित है जिसके लेखन में कल्हण ने अपने व्यक्तिगत ज्ञान एवं प्रत्यक्ष दर्शन से संग्रहित साक्ष्य को आधार बनाया है तथा तथ्यों को उसने स्रोतों से संग्रहित तथ्यों से पूर्ण किया है।

राजतरंगिणी के तरंगों के लेखन में जो बात ध्यान देने योग्य है वह है वृतांत का बदलता स्वर। पहले खंड में रचयिता, जो कि ब्राह्मण है,एक मंत्री का पुत्र है तथा संस्कृत का विद्वान है,एक तस्वीर बनाता है जो कि उसके दृष्टिकोण से एक आदर्श विश्व था जिसमें पुत्र अपने पिता के उत्तराधिकार होते थे। जिसमें वर्ण एवं लैंगिक श्रेणी की परंपरा का कठोरता से पालन किया जाता था।हालांकि अगले दो खण्डों में वह विस्तार से बताता है कि इन नियमों का उल्लंघन कैसे हुआ।कल्हण के अनुसार स्त्री शासको का होना किसी संत्रास जैसा था। कल्हण का ऐसा कहना समाज में स्त्री के दशा की ओर स्पष्ट संकेत करता है। कल्हण के लेखन को जो बात बेजोड़ बनती है यह है कि उसका आरंभ में ही उन स्रोतों का बताना जिनकी मदद से वह राजतरंगिणी के लेखन में आगे बढ़ा।

राज तरंगिणी की विषय वस्तु सम्यक है इसमें कश्मीर की उत्पत्ति पौराणिक मनु वैवस्वत की परंपरा के अनुसार वर्णित है। पौराणिक शासकों के अनंतर मातृगुप्त एवं विक्रमादित्य द, मौर्य अशोक, कर्कोटक शासन आदि का उसमें पूरा इतिहास वर्णित है। इसी इतिहास आधार पर कुछ विद्वान कल्हण को प्राचीन भारतीय इतिहासकार मानते हैं। पर कल्हण की कवि प्रतिभा और उसके साक्ष्यों में पौराणिक का बाहुबल देखकर कुछ इतिहासकार का कहना है कि वह केवल कवि हीं था। उसे इतिहासकारों की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता है।

राजतरंगिणी के अनुशीलन से पता चलता है कि कल्हण ने इस ग्रंथ के लेखन में अपने पूर्व एवं समकालीन स्रोत जैसे शासनादेशों, अभिलेख,मुद्राओं, प्राचीन स्मारकों को तथा राजकीय अभिलेख जैसे साक्ष्यों में सुरक्षित राजावालीयों हो एवं वंशावलियों का उपयोग किया है।कल्हण ने इन स्रोतों का उल्लेख अपने ग्रंथ के आरंभ के श्लोकों में किया है। कुछ स्रोतों की वह आलोचना भी करता है। डॉक्टर बाशम के अनुसार कल्हण ने अपने पूर्ववर्ती इतिहासकारों एवं पुराण का उपयोग किया है उसने केवल तथ्यों के संग्रह और तिथि कर्मों को ही विवरण का आधार नहीं बनाया बल्कि मंदिरों एवं मठों में रखे गए संलेख,अभिलेख एवं प्रशस्तियों का भी उपयोग किया है।

कल्हण ने अपने लेखन को शिक्षात्मक पाठ की तरह देखा। जो विशेष रूप से राजाओं को राजनीति की शिक्षा देने के लिए था। इनमें निष्पक्ष निर्णय देने और तटस्थता का भाव पैदा करने की कोशिश पर बल तो दिया ही गया है साथ ही एक कवि के हैसियत से कल्हण ने संस्कृत भाषा की परंपरा के भीतर जिसके अनुसार हर रचना में एक प्रमुख रस भाव होना चाहिए, जिस रस को महत्व दिया वह शांत रस था। हालांकि राज तरंगिणी में ऐसे खण्ड भी हैं जिनमें युद्ध की विभीषिका और उसके बाद की तबाही का सजीव चित्रण किया है। रोचक बात यह है कि कल्हण की राजभाषा से स्पष्ट रूप में निकटता थी, पर वह एक दरबारी कवि नहीं था।

विभिन्न दृष्टिकोण से कल्हण के लेखन का विश्लेषण और समीक्षा करने पर हम अंततः इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि कुछ कमियों के होते हुए भी कल्हण की लेखन शैली में एक ऐसी इतिहास लेखन की अभिनव धारा मिलती है जो अनेक दृष्टि उसे इतिहास की आधुनिक परिभाषा के समीप है।तथा जिसे गुण दोष या कोई अतिशयोक्ति नहीं प्रतीत होती नहीं प्रतीत होती इस भावना से आज इतिहासकारों को एक प्राचीन भारतीय इतिहास के रूप में स्वीकार करता है अंत में कल्हण एवं उसकी ग्रंथ राज तरंगिणी का मूल्यांकन करते हुए हम कह सकते हैं कि कश्मीर के 12 वीं शताब्दी के इतिहास का संबंध राज्य के प्रसिद्ध इतिहास लेखन से जुड़ा हुआ है। कल्हण की राज तरंगिणी के कारण उसकी गणना भारत के सर्वश्रेष्ठ इतिहासकारों में की जाती है।यह ग्रंथ अत्यंत उच्च कोटि का है जो अपनी अद्वितीय स्पष्टता और परिपक्व मानसिकता के आधार पर किए गए ऐतिहासिक विश्लेषण को प्रदर्शित करता है।